# कयामत, मैदाने हश्र, हौजे कौसर का बयान (बुखारी शरीफ)

**मौलाना मुहम्मद इमरान कासमी बिज्ञानवी.**

**एक हजार मुन्तखब हदीसे बुखारी शरीफ हिन्दी 'नरम-दिली का बयान' से रिवायत का खुलासा है.**

**नोटः- 'हदीष की रिवायत का खुलासा है'.**

**बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम**

१) रावी हज़रत आइशा रदी.| रसूलुल्लाहﷺ की खिदमत में कुछ देहाती लोग आए और पूछा की कयामत कब आएगी? आपने उन्मे से एक छोटी उम्र वाले की तरफ देखकर फरमाया : इस्का बुढापा आने से पहले-पहले तुम पर कयामत कायम हो जाएगी, यानी तुम्हे मौत आ जाएगी.

वजाहत- रसूलुल्लाहﷺ ने मौत को कयामत करार दिया है. चूंकि कयामत के दिन सब बेहोश हो जाएगे और मौत में भी बेहोशी होती है जैसा की रसूलुल्लाहﷺ वफात के वकत अपना हाथ पानी में डालते और अपने मुंह पर फेरते, फिर फरमाते 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' मौत में बडी सख्तिया है. (फत्हुल बारी)

२) रावी हज़रत अब्दुल्लाह रदी.| रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया :

कयामत के दिन सब्से पहले लोगो में खून (कत्ल) का फैसला किया जाएगा.
वजाहत- एक हदीस में है की सब्से पहले नमाज का हिसाब होगा. मतलब ये है की अल्लाह के हुकूक में सब्से पहले नमाज का और बन्दो के हुकूक में सब्से पहले खूने नाहक का फैसला किया जाएगा. (फत्हुल बारी)

३) रावी हज़रत सहल बिन साद रदी.| रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया : कयामत के दिन लोगो का हश्र सफेद गेहू की रोटी जैसी साफ और सफेद जमीन पर किया जाएगा. हज़रत सहल या किसी और रावी का बयान है की ये जमीन बे-निशान होगी.
वजाहत- जमीन की मौजूदा शक्ल बदल दी जाएगी, कुराने करीम में इसको स्पष्ट रूप से बयान किया गया है देखिए (सूरे इब्राहीम/४, आयत/४८) इसपर कोई मकान या पहाड या दरख्त वगैरह नहीं रहेंगे और इसे मैदाने मेहशर बना दिया जाएगा. (फत्हुल बारी)

४) रावी हज़रत अबू हुरैरह रदी.| रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया : कयामत के दिन लोगो के तीन गिरोह बनेगे जो (मुल्क शाम की जानिब मैदाने) हश्र (में जमा) किए जाएगे. एक गिरोह रहमत की उम्मीद रखे हुवे अपने अन्जाम से डरता होगा. दूसरा गिरोह एक ऊंट

पर दो-दो, तीन-तीन, चार-चार बल्की दस-दस आदमी बैठकर निकलेगे. तीसरे गिरोह को आग लेकर चलेगी, जहा पर ये लोग दोपहर के वकत आराम के लिए ठहरेगे वहा वह आग भी ठहर जाएगी और जहा रात को ठहर जाएगे वह आग भी ठहर जाएगी. जहा वे सुबह को ठहरेगे वहा वह आग भी उनके साथ ठहरेगी और जहा वे शाम करेंगे वहा वह आग भी शाम करेगी.
वजाहत- हश्र की तीन मन्जीले है, १. पूरब की तरफ से आग निकलेगी जो लोगो को पश्चिम की तरफ हांक कर लाएगी. २. जब लोग कब्रों से मैदाने मेहशर में इकट्ठे होगे. ३. जब फैसले के बाद जन्नत या जहन्नम की तरफ उन्हे रवाना किया जाएगा. (फत्हुल बारी)

५) रावी हज़रत आइशा रदी.| रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया : तुम कयामत के दिन नंगे पांव, नंगे बदन और बगैर खतना हुवे उठाए जाओगे. हज़रत आइशा (रदी) ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मर्द और औरते सब एक दूसरे के सतर को देखेगे? आपने फरमाया : वो वकत तो मौत से भी जियादा सख्त और खतरनाक होगा, वे ऐसा इरादा भी ना-कर सकेगे.
वजाहत- हज़रत आइशा ने अपनी तबई शर्म व हया का इजहार किया तो रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया : की उस दिन हर इन्सान को अपनी पडी होगी, मर्द औरतो की तरफ और औरते मरदो की तरफ नहीं

देखेगी. (फत्हुल बारी)
फरमाने इलाही- क्या ये लोग यकीन नहीं करते की वो एक बडे दिन के लिए उठाए जाएगे, जिस दिन लोग परवरदिगारे आलाम के सामने पेश होगे.

६) रावी हज़रत अबू हुरैरह रदी.| रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया : कयामत के दिन लोगो को इतना पसीना आएगा की जमीन में सत्तर गज तक फैल जाएगा, पसीना उनके मुंह बल्की कानो तक पोहच जाएगा.
वजाहत- एक हदीस में है की काफिर कयामत की सख्ती की वजह से अपने पसीने में डूब रहे होगे, अलबत्ता ईमान वाले हजरात मस्नदो पर होगे और उनपर बादलो का साया होगा. (फत्हुल बारी)

७) रावी हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रदी.| रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया : मेरा हौज एक महीने की मुसाफत (दूरी और सफर) के बराबर होगा (यानी बहुत लम्बा होगा). इस्का पानी दूध से जियादा सफेद और उस्की खुशबू मुश्क से जियादा अच्छी होगी. उसपर आसमानी सितारो की तरह आबखोरे (जाम) रखे हुवे होगे, जिसने एक दफा उस्मे से पानी पी-लिया तो वह फिर कभी प्यासा नहीं होगा.
वजाहत- एक हदीस में है की हौजे कौसर का पानी शहद से जियादा मीठा, मक्खन से जियादा नरम और बर्फ से जियादा ठंडा होगा. (फत्हुल बारी)

८)रावी हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रदी.| रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया : कयामत के दिन तुम्हारे सामने मेरा हौज होगा, वह इतना बडा है की जिस कद्र “जरबा” से “अजरह” का दरमियानी इलाका है.

वजाहत- “जरबा” और “अजरह” दो बस्तियों के नाम है.

९) रावी हज़रत हारिसा बिन वहब रदी.| रसूलुल्लाहﷺ ने जब हौजे कौसर का जिक्र किया तो फरमाया : उस्की लम्बाई चौडाई इतनी है जितना मदीना से सनआ तकका फासला.

वजाहत- सनआ नाम का शहर यमन में है. (आजकल यमन की राजधानी 'सनआ' ही है)